किशोरावस्था के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण, स्वधारणा एवं मूल्यों में सम्बन्ध का अध्ययन

डॉ. एकता पारीक
(प्राचार्या),
बियानी गर्ल्स बी.एड., कॉलेज, जयपुर

ममता शर्मा
(बी.एड.एम.एड),
बियानी गर्ल्स बी.एड., कॉलेज, जयपुर

सारांश

विद्यार्थी भविष्य में किस प्रकार का नागरिक बनेगा यह काफी हद तक उसको विद्यालय में दी जा रहीं शिक्षा व विद्यालय के वातावरण पर निर्भर करता है। विद्यालय बाल्यावस्था के पूर्णाया घरेलू जीवन और उस व्यापक जीवन में बीच की अर्द्ध पारिवारिक कड़ी है, जब युवक अपने माता–पिता की छत्र छाया छोड़ता है। इस समय में अपने आस पास विद्यालय में जो वातावरण उसे देखने को मिलता है, अन्य विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के सम्पर्क में आता है। विचारों का अदान प्रदान करता है। परस्तर अन्तः क्रिया करते है, पाठ्यक्रम के साथ सहगामी क्रियाओं, खेलकूद, सामाजिक एवं सांस्कृतिक समारोह नैतिक प्रवचन, शैक्षिक यात्राओं में हिस्सा लेता है इस सम्पूर्ण परिवेश का विद्यार्थी पर बहुत गहरा प्रभाव असर पड़ता है। विद्यालय वातावरण में विद्यार्थी संसार की महत्वपूर्ण क्रियाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करता है। विद्यार्थियों में स्वधारणा का निर्माण कार्य भी इसी समय शुरू हो जाता है। इस परिवेश में विद्यार्थी जो कुछ देखता है सुनता है इस बारे में अपनी स्वधारणा विकसित कर लेता है ये स्वधारणाएं विद्यार्थी के व्यक्तित्व का मुख्य हिस्सा बन जाती है जो कि विद्यार्थी के जीवन में मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

की वर्ड : *मूल्य,स्वधारणा, विद्यालय वातावरण,सरकारी विद्यालय,गैर सरकारी विद्यालय, किशोर विद्यार्थी*

१.प्रस्तावना

विद्यार्थी भविष्य में किस प्रकार का नागरिक बनेगा यह काफी हद तक उसको विद्यालय में दी जा रहीं शिक्षा व विद्यालय के वातावरण पर निर्भर करता है। विद्यालय बाल्यावस्था के पूर्णाया घरेलू जीवन और उस व्यापक जीवन में बीच की अर्द्ध पारिवारिक कड़ी है, जब युवक अपने माता–पिता की छत्र छाया छोड़ता है। इस समय में अपने आस पास विद्यालय में जो वातावरण उसे देखने को मिलता है, अन्य विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के सम्पर्क में आता है। विचारों का अदान प्रदान करता है। परस्तर अन्तः क्रिया करते है, पाठ्यक्रम के साथ सहगामी क्रियाओं, खेलकूद, सामाजिक एवं सांस्कृतिक समारोह नैतिक प्रवचन, शैक्षिक यात्राओं में हिस्सा लेता है इस सम्पूर्ण परिवेश का विद्यार्थी पर बहुत गहरा प्रभाव असर पड़ता है। विद्यालय वातावरण में विद्यार्थी संसार की महत्वपूर्ण क्रियाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करता है। किसी भी बालक के सम्पूर्ण व्यक्त्वि का निर्माण विद्यालय द्वारा ही सम्भव है। बालक जिस दिन से विद्यालय में जाना आरम्भ करता है उसी दिन से उसका व्यवहार सोच आदते कार्य उसमें हित रूचियाँ बदलने लग जाते है। एक तरफ तो अपने साथ के कक्षा के सहपाठी अन्य कक्षाओं के बालक जो उसके साथ उठते बैठते है जिनको देखकर वह वैसी ही प्रतिक्रियाएं करने लगता है मौज मस्ती, खेल कुद, साथ साथ रहना सहयोग करना झगड़ा करना करना, फिर मान जाना, दूसरे

बालको जैसा करने की चाह बालक में आश्चर्य चकित करने वाले परिवर्तन लाते है साथ ही इन सबके द्वारा बालक के व्यवहार व्यक्तित्व में परिवर्तन होने लगता है। आज समाज में मूल्यों का ह्रास व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए एक गम्भीर चुनौती है समस्या है। यदि विद्यार्थी के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है समाज मे सत्य, प्रेम, सहकार, सहयोग, सहानुभूति, सहिष्णुता, बन्धुत्व का वातावरण पैदा करना है और राष्ट्र की रक्षा करनी है उसकी एकता और अखण्डता बनाये रखनी है व आर्थिक समृद्धि लानी तो मूल्यों के महत्व को प्रत्येक विद्यार्थी को न केवल समझना होगा वरन् उन्हे अपने जीवन में उतरना भी होगा। मूल्यों के महत्व को समझने और उन्हें आत्मसात् करने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। इस संदर्भ में सर्वप्रथम मूल्य के अर्थ, प्रकृति, और वर्गीकरण को समझना आवश्यक है।

२.सम्बन्धित साहित्य

शिवप्पा डी. (2023) ने हायर सैकण्डरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले कारकों का अध्ययन करवाया कि वे कारक जैसे स्वधारणा और बुद्धि जो पूर्वानुमान बहाने वाले कारक है, उनके बीच सम्बन्धों पर अपना शोध कार्य किया। निष्कर्ष अध्ययन की आदतें, शैक्षिक आकांक्षाएँ, सामाजिक–आर्थिक प्रतिष्ठा स्तर और बुद्धि स्तर पर सह सम्बन्धित कारक रही है। बुद्धि का अनुपलब्धि पर सर्वाधिक प्रभाव रहा है।

पंडित (2022) – "किशोरों के आत्म सम्प्रत्यय, मनौवैज्ञानिक आवश्यकताओं व उनके व्यवहार का समायोजन पर अध्ययन (पी.एच.डी. बॉम्बे) विश्श्वद्यालय। समस्या इस शोध द्वारा किशोरों में आत्मसमप्रत्यय मनौवैज्ञानिक आवश्यकताओं व उनके व्यवहार का समायोजन पर अध्ययन करने का प्रयास किया गया। उद्देश्य अध्ययन का उद्देश्य था किशोरों में आत्म सम्प्रत्यय मनौवैज्ञानिक आवश्यताओं व व्यवहार का उनके समायोजन के प्रभाव ज्ञात करना। निष्कर्ष किशोरों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं में अन्तर पाया गया जैसे सहनशीलता, उपलब्धि, अकायनता, स्वायत्ता, प्रदर्शन इत्यादि। किशोरों के आदर्श स्व व जानने योग्य स्व और आदर्श स्व व सामाजिक स्व में अन्तर पाया गया।

सारस्वत आर. (2021) – "दिल्ली के हाई स्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन मूल्य शैक्षिणिक उपलब्धियों, सामाजिक आर्थिक स्तर व आत्म प्रत्यय के मध्य संमको का अध्ययन (पी.एच.डी. दिल्ली विश्वविद्यालय) समस्या – इस शोध में दिल्ली के हाई स्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन, मूल्य शैक्षणिक उपलब्धियां, सामाजिक आर्थिक स्तर व आत्म– प्रत्यय के मध्य संबंधों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। उद्देश्य – अध्ययन का उद्देश्य दिल्ली हाई स्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन मूल्य व शैक्षणिक उपलब्धि सामाजिक आर्थिक स्तर व आत्म समप्रत्यय के मध्य संबंध का अध्ययन करना है। निष्कर्ष – बालकों का आत्म समप्रत्यय धनात्मक व सार्थक रूप से बालकों में सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित पाया गया जबकि बालिकाओं का आत्म सम्प्रत्यय धनात्मक व सार्थक रूप से घर, स्वास्थ्य तथा सामाजिक सांवेगिक स्तर स्कूल समायोजन से सम्बन्धित पाया गया। बालकों का आत्म सम्प्रत्यय धनात्मक व सार्थक रूप से राजनीतिक व धार्मिक मूल्यों से सम्बन्धित पाया गया जबकि बालिकाओं में ऐसा संबंध नहीं पाया गया।

श्रीवास्तव (2020) – किशोर बालक तथा बालिकाओं का उनके आत्म विश्लेषण, प्रेरणा अभिव्यक्ति में तनाव के संबंध में अध्ययन" समस्या – किशोरावस्था के समय तनाव की प्रकृति तथा इसकी प्रत्ययता तथा इसका स्वयं पर प्रभाव कुछ निश्चित चरों जैसे आत्म विश्लेषण, उपलब्धि प्रेरणा व अभिव्यक्ति के साथ सम्बन्ध। उद्देश्य – तनाव का कुछ निश्चित चरों जैसे आत्मविश्लेषण, उपलब्धि, प्रेरणा व शैक्षणिक व अशैक्षणिक अभिव्यक्ति के साथ संबंध को ज्ञात करना। पुल्लिंग विषयों का स्त्रीलिंग विषयों के साथ आत्म विश्लेषण उपलब्धि प्रेरणा तथा दोनों की अन्तःक्रिया के आधार पर तनावों का अध्ययन करना। शैक्षणिक तथा गैर शैक्षणिक अभिव्यक्ति के प्रभावों तथा उनकी अन्तःक्रिया के आधार पर तनाव का अध्ययन। निष्कर्ष आत्म विश्लेषण, प्रेरणा तथा अभिव्यक्ति का शैक्षिक व गैर शैक्षणिक दोनों ही

क्षेत्रों में तनाव के साथ कोई सह सम्बन्ध नहीं है। लड़कियों के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि तनाव तथा विभिन्न चरों के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं। लड़कियों के तनाव के प्राप्तांक लड़कों से अधिक है।

जैन जयन्ती आर (2019) – "किशोर बालिकाओं के आत्म सम्प्रत्यय व उनमें अभिभावक व अभिभावक स्थापन्न से पहचान (जो कि शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक हो का अध्ययन)" (पी.एच.डी. नागपुर) समस्या – प्रस्तुत शोध में किशोर बालिकाओं के आत्म संकल्प व शैक्षिक लक्ष्य के बीच सम्बन्ध का पता लगाना व अभिभावक और अभिवाक स्थापन्न के मध्य समस्या का अध्ययन करने का प्रयास किया गया। उद्देश्य – किशोर बालिकाओं के आत्म संकल्प व शैक्षिक लक्ष्य के बीच सम्बन्ध का पता लगाना, धनात्मक आत्म प्रत्यय व संज्ञानात्मक योग्यता के मध्य संबध का परीक्षण करना। उपलब्धि, अभिप्रेरणा व आत्म संकल्प के मध्य अनुरूपता का पता लगाना व उच्च शैक्षिक के अभिभावक और स्थापन्न से समरचता सिद्ध करना। निष्कर्ष –उच्च आत्म संकल्प वाली बालिकाओं ने उच्च शैक्षिक लक्ष्य को चुना इससे यह सिद्ध होता है कि शिक्षण उपलब्धि आत्म संकल्प पर निर्भर करती है व पुर्नबलन प्रदान करती है। धनात्मक आत्म संकल्प (प्रत्यय) व उच्च संज्ञानात्मक योग्यता साथ साथ चलती है।

३.शोध अन्तराल

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध से संबंधित देश व विदेश में किए गए विभिन्न निष्कर्ष को कर रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है **शिवप्पा डी. (2023), पंडित (2022), सारस्वत आर. (2021), श्रीवास्तव (2020), जैन जयन्ती आर (2019)** आदि "विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण, स्वधारणा एवं मूल्यों में सम्बन्ध का अध्ययन किया गया परन्तु "किशोरावस्था के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण, स्वधारणा एवं मूल्यों में सम्बन्ध का अध्ययन पर शोाध नहीं किया गया इसलिए "किशोरावस्था के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण, स्वधारणा एवं मूल्यों में सम्बन्ध का अध्ययन किया जाए इसलिए इस समस्या का चुनाव किया गया है।

४.समस्या कथन

"किशोरावस्था के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण, स्वधारणा एवं मूल्यों में सम्बन्ध का अध्ययन"

५.शोध के उद्देश्य

१.किशोरावस्था के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना।

२.किशोरावस्था के विद्यार्थियों की स्वधारणा का अध्ययन करना।

६.शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

७.न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के चार विद्यालयों का चयन किया गया है। 2 सरकारी विद्यालय के 60–60 विद्यार्थियों व 2 गैर सरकारी विद्यालय के 60–60 विद्यार्थियों को चुना गया है अतः कुल 240 विद्यार्थियों का न्यादर्श होगा।

८.अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

- **मानकीकृत :–** स्वत्व बोध परीक्षण श्रीमती जे.पी. शौरी एवं गोस्वामी

- **मानकीकृत :–** विद्यालय वातावरण, प्रश्नावली, के.एस. मिश्रा (आगरा)
- **मानकीकृत :–** मूल्य परीक्षण, श्रीमती जे.पी. शौरी डॉ० आर.पी. वर्मा (वाराणासी)

परिकल्पना : सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को विद्यालय वातावरण में सार्थक सह सम्बन्ध का अध्ययन

क्र. सं.	चर Variable	मध्यमान M	विद्यार्थी N	सह–सम्बन्ध गुणांक	Df	सार्थकता स्तर Level of Significant
1.	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	43.82	120	0.151	158	0.01 स्वीकृत
2.	गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	37.46	120			0.05 स्वीकृत

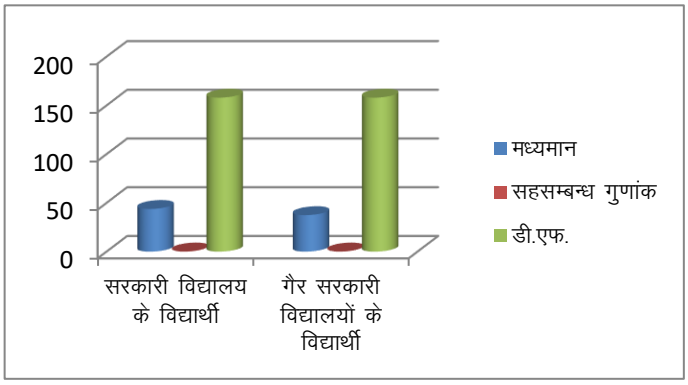

परिणाम

उपरोक्त सारणी संख्या 4.1 में सरकारी विद्यालय के 80 विद्यार्थियों तथा गैर सरकारी विद्यालय के 80 विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन किया गया। गणना द्वारा मध्यमान क्रमशः 43.82 एवं 37.46 प्राप्त हुआ। दोनों चरों में अर्थात सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सह सम्बन्ध ज्ञात किया गया जो 0.151 पाया गया जो सुक्ष्म एवं नगण्य धनात्मक सह सम्बन्ध है।

df - 158 के अंश पर 0.05 स्तर पर सार्थक मान 0.159 व 0.01 स्तर पर सार्थक मान 0.209 है। गणना द्वारा प्राप्त मान 0.05 व 0.01 स्तर के सार्थक मान से कम है। अतः निराकरणीय, परिकल्पना संख्या 4.1 स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार हम कह सकते है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

९.निष्कर्ष

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन किया गया है। गणना द्वारा दोनो चरों में अर्थात सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में अन्तर ज्ञात किया गया जो सूक्ष्म एवं नगण्य धनात्मक अन्तर है। विद्यालय वातावरण से सम्बंधित निष्कर्षों के अनुसार सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है। अतः उपर्युक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. शवप्पा, डी. (2023). ने हायर सैकण्डरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले कारकों का अध्ययन, तमिलनाडू विश्वविद्यालय, पी.एच.डी स्तर।
२. पंडित, (2022). "किशोरों के आत्म सम्प्रत्यय, मनौवैज्ञानिक आवश्यकताओं व उनके व्यवहार का समायोजन पर अध्ययन (पी.एच.डी. बॉम्बे) विश्श्वद्यालय।

३. सारस्वत, आर. (2021)."दिल्ली के हाई स्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन मूल्य शैक्षिणिक उपलब्धियों, सामाजिक आर्थिक स्तर व आत्म प्रत्यय के मध्य संमको का अध्ययन (पी.एच.डी. दिल्ली विश्वविद्यालय)

४. श्रीवास्तव, (2020). किशोर बालक तथा बालिकाओं का उनके आत्म विश्लेषण, प्रेरणा अभिव्यक्ति में तनाव के संबंध में अध्ययन" पी.एच.डी. स्तर राजस्थान विश्वविद्यालय।

५. जैन, जयन्ती आर (2019). "किशोर बालिकाओं के आत्म सम्प्रत्यय व उनमें अभिभावक व अभिभावक स्थापन्न से पहचान (जो कि शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक हो का अध्ययन)" (पी.एच.डी. नागपुर)

६. www.character.org

७. www.books.google.co.in